UPSC Daily Current Affairs 02 Jun 2021

1. टीकाकरण में लैंगिक अंतराल

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II- सामाजिक मामले, स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, कोविड-19 टीकों की कमी की राज्यों की रिपोर्ट के अनुसार और टीकाकरण करवाने के लिए समय निर्धारित करवाने के लिए लोगों द्वारा भाग-दौड़ के बीच में सभी राज्यों में टीकाकरण अभियान में लैंगिक विभाजन स्पष्ट नजर आ रहा है।

खबरों में और भी है

- केवल चार राज्य केरल, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ और हिमाचल प्रदेश ने ही अभी तक पुरुषों से महिलाओं का टीकाकरण किया है।
- आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, राष्ट्रीय स्तर पर टीकाकरण में लैंगिक अंतराल 4 प्रतिशत है लेकिन ऊंचे कोविड बोझ वाले राज्यों जैसे दिल्ली और उत्तर प्रदेश में पुरुष-महिला टीकाकरण अनुपात में अंतर 10 प्रतिशत से ज्यादा का है।

26 मई, 2021 तक लिंग के अनुसार भारत में टीकाकरण

पुरुष	83,071,923
महिला	73,073,573
अन्य	23,499

वे राज्य जहां पुरुषों से ज्यादा महिलाओं का टीकाकरण हुआ

- दो ऊंचे भार वाले राज्य केरल और कर्नाटक में पुरुषों से ज्यादा महिलाओं का टीकाकरण हुआ।
- हिमाचल प्रदेश और छत्तीसगढ़ भी इसी सूची में हैं।

सबसे ज्यादा अंतर

- सबसे ज्यादा लैंगिक विभाजन के मामले में 14.3 प्रतिशत के साथ नागालैंड सबसे ऊपर है जिसके बाद जम्मू और कश्मीर का 13.76 प्रतिशत के साथ स्थान है।
- **उत्तर प्रदेश, पंजाब, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश जैसे राज्यों में 10-13 प्रतिशत के बीच का टीका अंतर है।**
- चंडीगढ़ के लिए यह 11 प्रतिशत के आसपास है।

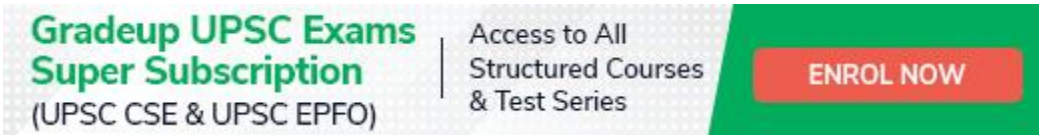

इस लैंगिक अंतराल के पीछे कारण

डिजिटल निरक्षरता

- डिजिटल निरक्षरता की वजह से, कई मामलों में महिलाएं इस बारे में नहीं जानती हैं कि CoWIN प्लेटफॉर्म पर टीकाकरण के लिए कैसे पंजीकरण करवाएं।
- वे इस बारे में तकनीक की ज्यादा जानकारी रखने वाले पुरुषों पर निर्भर रहती हैं।
- पुरुष सत्तात्मक पारितंत्र प्रणाली जो ग्रामीण क्षेत्रों में चल रही है इस अंतराल को और भी बढ़ा देती है।

टीके को लेकर हिचक

- महिलाओं के मध्य टीके को लेकर हिचक और बढ़ जाती है जिसका कारण मासिक धर्म और प्रजनन पर इसके प्रभाव से संबंधित मिथकीय बातें और अफवाहें हैं।
- गर्भवती और दूध पिलाने वाली मांएं टीकाकरण को करवाने में सूचना और प्रभावी संचार पैरवी के अभाव में हिचकती हैं।

निम्न गतिशीलता

- महिलाओं के मध्य निम्न गतिशीलता और निर्णय लेने की क्षमता उनके द्वारा टीके को स्वीकार करने में बाधा पैदा कर सकते हैं।
- सामाजिक सांस्कृतिक कारक जो ग्रामीण परिदृश्य में गहरे पैठे हुए हैं, स्थिति को और खराब करेंगे।

आगे का मार्ग

- लिंग आधारित बाधाओं पर टीके की योजना और लगाने में पर्याप्त ध्यान देना चाहिए।
- हमें अपने सहायक चिकित्सा स्टाफ़ जैसे ASHA और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, दाईयों, नर्सों के सही संचालन की जरूरत है जो खुशी का विषय है कि अधिकांशतः महिलाएं हैं।
- इन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को ज्यादा प्रोत्साहन राशि देने की जरूरत है जिससे वे जमीनी स्तर पर महिलाओं को प्रेरणा दे सकें।
- पंचायत स्तर पर महिलाओं का ज्यादा प्रतिनिधित्व भी उन्हें प्रभावी मतसाधक नेता बनाता है जो स्वास्थ्य संवाद रणनीतियों में भागीदारी के लिए महिलाओं को गतिशील कर सकती हैं।
- टीकाकरण मेलों का आयोजन करके अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के दौरान कुछ राज्यों में आयोजित की गई नवाचार वाली प्रथाएं जिससे महिलाओं के विशेष महसूस करवाया जा सके, समय की जरूरत है।
- गतिशील टीकाकरण केंद्रों को प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

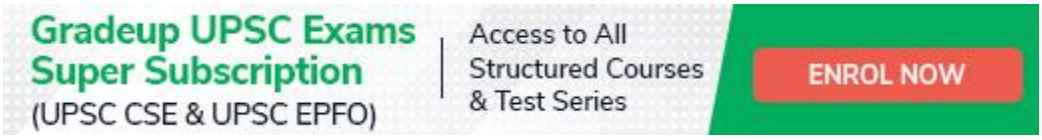

2. वृद्धों के लिए केरल की "बेल ऑफ फेथ योजना"

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II- शासन, स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस)

खबरों में क्यों है?

- केरल की 'बेल ऑफ फेथ' योजना जल्दी ही गांवों तक विस्तारित कर दी जाएगी जिससे वह अकेले रहने वाले वृद्ध नागरिकों तक पहुँच सके।
- पूर्व में, यह योजना केरल में बड़ी संख्या में शहरी परिवारों में सफलतापूर्वक क्रियान्वित की गई।

बेल ऑफ फेथ योजना के बारे में जानकारी:

- इसे 2018 में केरल पुलिस ने लागू किया था।

लक्ष्य

- इसका लक्ष्य केरल की सामुदायिक पुलिसिंग योजना के हिस्से के रूप में अकेले रहने वाले वृद्ध नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना है।
- इस योजना के तहत, पुलिस ने वृद्ध नागरिकों के घरों में एक घंटी लगाई है।
- आपातकाल के दौरान जब वृद्ध नागरिक घंटी बजाएंगे तो पड़ोसी अलार्म के साथ सतर्क हो जाएंगे।
- पड़ोसी तुरंत या तो घर पहुँच सकते हैं अथवा पुलिस अथवा अस्पताल से संपर्क कर सकते हैं।

3. WHO ने कोविड-19 वैरिएंटों का नामकरण ग्रीक अक्षरों के आधार पर किया

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- स्वास्थ्य, स्रोत- CNBC 18))

खबरों में क्यों है?

- हाल में, फरवरी 2020 में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोविड-19 को आधिकारिक तौर पर नोबेल कोरोनावायरस से होने वाले रोग के लिए नाम घोषित किया था।

कोविड-19 वायरसों का नामकरण

- WHO ने यह नाम निर्धारण प्रणाली WHO, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन और खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के बीच में 2015 में तय किए गए दिशा-निर्देश के अनुसार तय की थी।

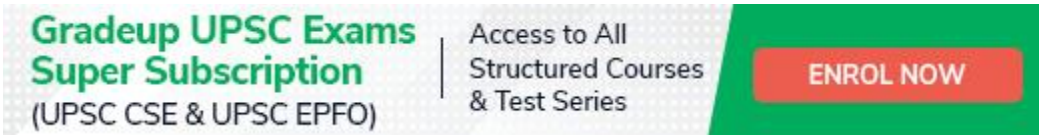

- WHO ने इसका कोविड-19 नामकरण किया जिसमें कोरोनावायरस रोग शब्दों को तोड़ दिया गया। इसलिए, COVID में CO का अर्थ कोरोना, जबकि 'VI' का अर्थ वायरस और 'D' का अर्थ रोग है।
- संख्या 19 का अर्थ वर्ष 2019 है।

ग्रीक अक्षर क्यों?

- WHO ने काफी चर्चा के बाद वैरिएंटों की पहचान के लिए वैज्ञानिक अंकों के स्थान पर ग्रीक अक्षरों के प्रयोग का निर्णय लिया है।
- WHO के अनुसार अल्फा, बीटा और गामा जैसे अक्षरों के प्रयोग से- B.1.1.7, B.1.351 और P.1 के स्थान पर- वैरिएंटों को बताना यह आसान और ज्यादा व्यवहारिक कर देगा जिससे गैर वैज्ञानिक श्रोताओं के साथ इनकी चर्चा आसान होगी।
- अबसे, कोविड-19 के B.1.617.1 और B.1.617.2 वैरिएंट, जिन्हें पहली बार भारत में अक्टूबर **2020 में पहचाना गया था, कप्पा और डेल्टा कहलाएंगे।**
- रोग का नामकरण करते समय, WHO ने शर्तों को जारी किया है जिससे भौगोलिक स्थान, लोगों के नाम, पशुओं और खाद्य की प्रजातियां, संस्कृति का उल्लेख, जनसंख्या, उद्योग अथवा पेशा और वे शब्द जो बेकार में डर पैदा करते हैं, को इसमें शामिल न किया जाए।

Variants of Concern

NEW WHO LABEL	PANGO LINEAGE	EARLIEST SAMPLE
Alpha	B.1.1.7	UK (September 2020)
Beta	B.1.351	South Africa (May 2020)
Gamma	P.1	Brazil (November 2020)
Delta	B.1.617.2	India (October 2020)

Variants of Interest

NEW WHO LABEL	PANGO LINEAGE	EARLIEST SAMPLE
Epsilon	B.1.427/B.1.429	US (March 2020)
Zeta	P.2	Brazil (April 2020)
Eta	B.1.525	Many Countries (December 2020)
Theta	P.3	Philippines (January 2021)
Iota	B.1.526	US (November 2020)
Kappa	B.1.617.1	India (October 2020)

वायरस में अन्य नाम भी दिए गए हैं

- संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने वायरस को 'चीनी वायरस' कहा था।

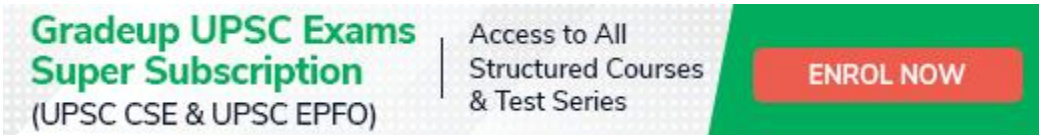

- जब ब्राज़ील में नया स्ट्रेन खोज गया, इसे ब्राज़ील वैरिएंट कहा गया, जिसके बाद UK वैरिएंट, दक्षिणी अफ्रीकी वैरिएंट और अब भारतीय वैरिएंट का नाम आया।
- ये सभी, यद्यपि वैज्ञानिकों ने वैरिएंटों की संख्याओं को मुश्किल संरूपण दिए थे, जो सामान्य व्यक्ति के लिए स्वाभाविक रूप से काफी असमंजस वाले थे।
- उदाहरण के लिए, UK वैरिएंट जिसे सितंबर 2020 में खोजा गया था, का नामकरण B.1.1.7 किया गया।
- दिशा-निर्देशों का संपूर्ण उद्देश्य बेकार हो गया होता यदि ये नाम रह गए होते।

4. वित्त वर्ष 21 में भारत ने रिकॉर्ड प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त किया

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- अर्थशास्त्र, स्रोत- द हिंदू)

खबरों में क्यों है?

- वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने हाल में एक रिपोर्ट जारी की है जिसके अनुसार भारत वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान सबसे ज्यादा विदेशी प्रत्यक्ष निवेश हासिल करने में कामयाब रहा है। यह FDI $81.72 अरब का है।
- यह पूर्व के वित्त वर्ष के $74.39 अरब से 10 प्रतिशत ज्यादा है।

सरकार द्वारा किए गए उपाय

- निवेश प्रोत्साहन और व्यवसाय करने की सुगमता के परिणामस्वरूप देश में FDI का अंतर्प्रवाह बढ़ा है।

Foreign investment into India

Item No	No Investment category	2019-20	2020-21	Growth rate (%)
1	Gross inflows/Gross Investments (Items 3+5)	74,390	81,721	9.9
2	Foreign Investment Inflow (Items 4+7)	44,417	80,209	80.6
3	Direct investment to India (items 4+6)	56,006	54,665	-2.4
4	Net Foreign direct investment (Items 3-6)	43,013	43,366	0.8
5	Repatriation/Disinvestment	18,384	27,056	47.2
6	FDI by India (Outward FDI)	12,993	11,299	-13.0
7	Net Portfolio investment	1,403	36,843	2526.0
7.1	(of which) Foreign Institutional Investors (FIIs)	552	38,097	6801.6

Source: Reserve Bank of India Bulletin, May 2021, Table No. 34

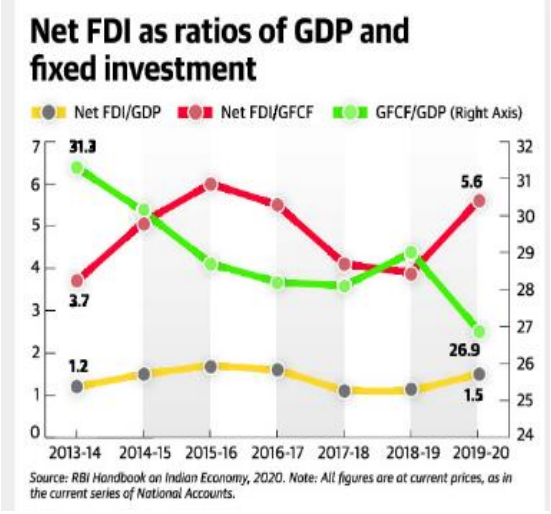

सकल अंतर्प्रवाह क्यों होता है?

Gradeup UPSC Exams Super Subscription (UPSC CSE & UPSC EPFO) | Access to All Structured Courses & Test Series | ENROL NOW

- RBI रिपोर्ट में सकल अंतर्प्रवाह/सकल निवेश प्रेस रिलीज़ में कुल FDI अंतर्प्रवाह के समान है, जो वाणिज्य मंत्रालय के अनुमान के समान है।
- सकल अंतर्प्रवाह में शामिल हैं -
    - भारत में प्रत्यक्ष निवेश
    - देश प्रत्यावर्तन/विनिवेश
- विच्छेदन दर्शाता है कि भारत को प्रत्यक्ष निवेश 2.4% तक गिर गए हैं।
- इसलिए, देश प्रत्यावर्तन/विनिवेश में 47% की बढ़ोत्तरी सकल अंतर्प्रवाह में वृद्धि के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है।

देश प्रत्यावर्तन क्या है? यह इतना क्यों महत्वपूर्ण है?

- FDI अंतर्प्रवाह ज्यादा से ज्यादा निजी इक्विटी फंड से बनते हैं, जो सामान्य तौर पर लाभों को बुक (निवेश पर प्राप्त होने वाले वे लाभ जो अभी प्राप्त नहीं हुए हैं) करने के लिए 3-5 वर्षों के बाद विनिवेशित किये जाते हैं।
- सैद्धांतिक रूप से, निजी इक्विटी फंड से दीर्घावधि के ग्रीनफील्ड निवेश नहीं निर्मित होते हैं।
- इसी तरह से, निवल आधार पर मापन करने पर (अर्थात, "भारत को प्रत्यक्ष निवेश" भारत को निवल FDI अथवा भारत से बाहिर्प्रवाह FDI), पिछले वर्ष की तुलना में 2020-21 में भारत को प्रत्यक्ष निवेश ज्यादा नहीं बढ़े हैं (0.8%)।

मध्यम योगदान

- महामारी वर्ष के दौरान कुल FDI अंतर्प्रवाह में बढ़ोत्तरी की संपूर्ण व्याख्या पूंजी बाजार में लघु अवधि के तेजी से बढ़ने वाले FIIs से की जाती है- और निश्चित निवेश और रोजगार सृजन को इसमें जोड़ा नहीं जाता है।
- अब कई वर्षों से, सरकार ने सकल FDI अंतर्प्रवाह में वृद्धि को उसकी आर्थिक नीतियों की सफलता के रूप में बताया है जिससे बहिर्निवेश और निवेश में मंदी और बढ़ती बेरोजगारी दरों (विशेष रूप से पूर्व वर्ष में) की वृहद् आलोचना का जवाब दिया जा सके।
- 2013-14 और 2019-20 के बीच में निवल FDI का GDP से अनुपात 1% से जरा सा ज्यादा रहा है (बाएं हाथ का पैमाना), जिसमें कोई स्पष्ट बढ़ती हुई प्रवृत्ति नहीं है।
- इसी तरह से, निवल FDI से सकल निश्चित पूंजी संरचना का अनुपात (निश्चित निवेश) 4% और 6% (बाएं हाथ का पैमाना) के बीच में सीमाबद्ध है।
- ये ठहरी हुई प्रवृत्तियां उस समय स्पष्ट हो जाती हैं जब अर्थव्यवस्था की निश्चित निवेश दर-GDP अनुपात से सकल निश्चित पूंजी संरचना - 2013-14 के 31.3% से गिरकर 2019-20 में 26.9% (दाहिने हाथ का पैमाना) रह गई।
- इसलिए, घरेलू बहिर्निवेश और निवेश में FDI अंतर्प्रवाह का योगदान मध्यम स्तर पर ही है।

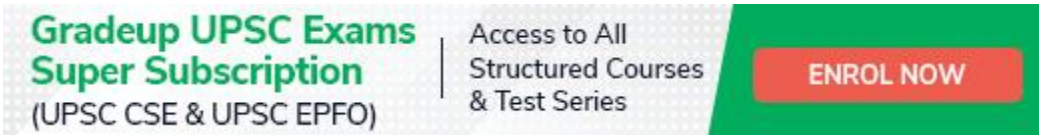

रिपोर्ट की प्रमुख खास बातें

- पिछले वित्त वर्ष में सिंगापुर भारत में सबसे बड़ा निवेशक था, इसका FDI में योगदान 29 प्रतिशत का था, जिसके बाद 23 प्रतिशत के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका और 9 प्रतिशत के साथ मॉरिशस का योगदान था।

सबसे बड़े निवेशक

- सबसे ज्यादा निवेश करने वाले दस देशों में, वित्त वर्ष 21 के दौरान प्रतिशत बढ़ोत्तरी के संदर्भ में सऊदी अरब सबसे बड़ा निवेशक था। इसने पूर्व वित्तीय वर्ष के $89.93 मिलियन की तुलना में $2,816.08 मिलियन का निवेश किया।

राज्यों में FDI

- गुजरात ने कुल इक्विटी अंतर्प्रवाहों का 37 प्रतिशत प्राप्त करके सबसे ज्यादा FDI हासिल किया।
- महाराष्ट्र और कर्नाटक में क्रमशः 27 प्रतिशत और 13 प्रतिशत के साथ दूसरे और तीसरे सबसे ज्यादा अंतर्प्रवाह रहे।

क्षेत्र

- कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर क्षेत्र ने वित्त वर्ष 21 में सबसे ज्यादा FDI हासिल किए, यह कुल FDI इक्विटी अंतर्प्रवाह का 44 प्रतिशत था।
- कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर क्षेत्र के अंतर्गत, प्रमुखतः से प्राप्त करने वाले राज्य समीक्षित वित्त वर्ष के दौरान 78 प्रतिशत के साथ गुजरात, 9 प्रतिशत के साथ कर्नाटक और 5 प्रतिशत के साथ दिल्ली रहे।
- निर्माण (अवसंरचना) गतिविधियों और सेवा क्षेत्र का स्थान क्रमशः 13 प्रतिशत और 8 प्रतिशत के साझेदारी के साथ इसके बाद रहा।
- प्रमुख क्षेत्र, जिनके नाम निर्माण (अवसंरचना), कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर, रबड़ वस्तुएं, खुदरा व्यापार, औषधि और फार्मास्युटिकल्स, और विद्युतीय उपकरण हैं, ने पूर्व वर्ष की तुलना में वित्त वर्ष 21 के दौरान इक्विटी में 100 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी रिकॉर्ड की।

5. चीन ने H10N3 बर्ड फ्लू के पहले मानव मामले की सूचना दी

(सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- विज्ञान एवं तकनीक, स्रोत- द हिंदू)

खबरों में क्यों है?

Gradeup UPSC Exams Super Subscription (UPSC CSE & UPSC EPFO) | Access to All Structured Courses & Test Series ENROL NOW

- चीन के राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के अनुसार, चीन के पूर्वी जियांगसू प्रांत के 41 वर्षीय व्यक्ति में बर्ड फ्लू के H10N3 स्ट्रेन के साथ संक्रमण के पहले मानव मामले की पुष्टि हुई है।

H10N3 के बारे में जानकारी

- यह पोल्ट्री में निम्न रोगाणु अथवा आपेक्षिक रूप से कम गंभीर वायरस का स्ट्रेन है।
- NHC ने कहा है इसके बड़े पैमाने पर फैलने का जोखिम कम है।
- वैश्विक रूप से पूर्व में H10N3 के साथ मानव संक्रमण का कोई मामला अभी तक नहीं आया है।

संबंधित सूचना

H7N9 बर्ड फ्लू प्रकोप

- H7N9 बर्ड फ्लू स्ट्रेन से 2016-2017 के दौरान लगभग 300 लोगों की मृत्यु हो गई थी।
- H7N9 का पहला मानव मामला मार्च 2013 में चीन में बाहर आया था।
- इसके बाद फ्लू के मानव मामले पूरे अप्रैल में आने जारी रहे और फिर गर्मी के महीनों के दौरान केवल कुछ मामले ही रह गए।

G4 वाइन फ्लू वायरस के बारे में जानकारी

- हाल में, चीन से वैज्ञानिकों ने इंफ्लूएंजा वायरस के हाल के उभरे हुए स्ट्रेन की पहचान की है जिसका नाम G4 है, जो चीनी सुअरों को संक्रमित कर रहा है और जिसके महामारी में बदल जाने की संभावना है।

G4 वाइन फ्लू वायरस के बारे में जानकारी

- G4 स्वाइन फ्लू स्ट्रेन में उस वायरस के समान जींस हैं जिसने 2009 में फ्लू महामारी फैलाई थी।
- G4 स्ट्रेन में मानव प्रकार रिसेप्टरों (जैसे, SARS-CoV-2 वायरस मानवों में ACE2 रिसेप्टरों से बंध जाता है) से बंधने की क्षमता होती है।
- यह मानव वायुमार्ग उपकला कोशिकाओं में अपने आप की प्रतिकृति बनाने में सक्षम रहा था, और इसने गंधबिलाव में एयरोसोल संप्रेषण और प्रभावी संक्रामकता दर्शाई।
- सुअर महामारी इंफ्लूएंजा वायरस की पीढ़ियों के लिए मध्यवर्ती अतिथि हैं।

पृष्ठभूमि

2009 स्वाइन फ्लू महामारी

Gradeup UPSC Exams Super Subscription (UPSC CSE & UPSC EPFO) | Access to All Structured Courses & Test Series ENROL NOW

- WHO ने 2009 में टाइप ए H1N1 इंफ्लूएंजा वायरस के प्रकोप को एक महामारी घोषित किया था जब वैश्विक स्तर पर लगभग 30,000 मामले थे।
- 2009 की महामारी स्वाइन फ्लू के एक स्ट्रेन से हुई थी जिसका नाम H1N1 वायरस है, जो मानव से मानव को संप्रेषित हो गया था।
- **स्वाइन फ्लू के लक्षणों में बुखार, खांसी, गले में खराश, शरीर में दर्द, सिरदर्द, ठंड लगना और थकान शामिल हैं।**

6. विश्व उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- स्वास्थ्य, स्रोत- DTE)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, जारी 74वीं विश्व स्वास्थ्य सभा ने 30 जनवरी को **'विश्व उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग' (NTD) दिवस** के रूप में घोषित किया।
- इस दिवस को पहचान देने का प्रस्ताव का विचार संयुक्त अरब अमीरात ने दिया था।
- अनौपचारिक रूप से 2020 में पहला विश्व NTD दिवस मनाया गया था।

संबंधित सूचना

- भारत ने हाल में दूसरे वार्षिक विश्व उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग (NTD) दिवस पर उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग से मुकाबला करने के लिए एकता के चिन्ह के रूप में **लाइट अप कुतुबमीनार** के द्वारा विश्व से अपने को जोड़ा।

क्यों कुछ उष्णकटिबंधीय रोग "उपेक्षित" कहलाते हैं?

Gradeup UPSC Exams Super Subscription (UPSC CSE & UPSC EPFO) | Access to All Structured Courses & Test Series ENROL NOW

- इन रोगों से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले लोग अक्सर सबसे गरीब जनसंख्या होती है जो दूरस्थ, ग्रामीण क्षेत्रों, शहरी मलिन बस्तियों अथवा संघर्ष वाले क्षेत्रों में निवास करते हैं।
- उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग गरीबी की परिस्थितियों में पलते हैं और विकासशील विश्व में गरीब जनसंख्याओं में लगभग विशेष रूप से केंद्रित होते हैं।
- मजबूत राजनीतिक आवज की कमी होने की वजह से, इन उष्णकटिबंधीय रोगों से प्रभावित लोग का स्तर और दर्जा स्वास्थ्य प्राथमिकताओं में नीचे होता है।
- विश्वसनीय सांख्यिकीय की कमी और रोगों के कठिन उच्चारण वाले नामों की वजह से इन्हें कुहासे से बाहर लाने के प्रयास बाधित हुए हैं।
- इन रोगों में शामिल हैं डेंगू, रेबीज़, अंधता कुकरे, बुरुली अल्सर, कालाजार, कोढ़ (हेन्सन रोग), चागास रोग, मानव अफ्रीकी ट्राईपैनोसोमियासिस (सोने की बीमारी), लीशमैनिआसिस, सिस्टीसेर्कोसिस, ड्रैकुनकुलियासिस (गिनी कृमि रोग), इचीनोकोक्कोसिस, खाद्य से पैदा होने वाला ट्रेमाटोड संक्रमण, लिम्फेटिक फाइलेरिया, ओन्चोसेरसियासिस (रिवर अंधता), स्चीस्टोसोमियासिस (बिल्हारजियासिस), मिट्टी से संप्रेषित होने वाला हेल्मिन्थियासेस (आंत के कृमि)।

लाखों लोगों की मृत्यु का कारण

- उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग 1 अरब से ज्यादा लोगों को प्रभावित करते हैं, जिसमें मूल रूप से उष्णकटिबंधीय और उप-उष्णकटिबंधीय मौसमों में रहने वाली गरीब जनसंख्याएं शामिल हैं।

होने का कारण

- ये संक्रमण असुरक्षित जल, खराब आवासीय परिस्थितियों और खराब स्वच्छता की वजह से होता है।

NTDs पर लंदन घोषणा:

- इसे 30 जनवरी, 2012 को NTDs के वैश्विक भार को मान्यता देने के लिए अपनाया गया था।

भारत और उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग

- भारत में इन प्रमुख उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोगों में से कम से कम 11 का दुनिया का सबसे बड़ा संपूर्ण भार है जिसमें डेंगू, हुककृमि रोग और रेबीज़ शामिल हैं।
- यह रोग अपंग, कुरूप यहां तक कि प्रभावित करने वाले के लिए घातक भी हैं।
- भारत ने सफलतापूर्वक कुछ संक्रामक रोगों का उन्मूलन किया है- जैसे कि गिनी कृमि, कुकरे और कालाजार- हाल के वर्षों में।

भारत में उपेक्षित रोग अनुसंधान पर हाल की नीतियां

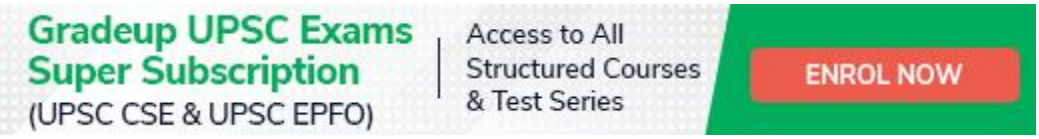

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (2017)** एक महत्वाकांक्षा का निर्धारण करती है जिसमें स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने के लिए नवाचार को प्रोत्साहित करना और यह सुनिश्चित करना कि सबसे ज्यादा जरूरतमंद लोगों के लिए नई औषधियां वहनीय हों, शामिल हैं। लेकिन यह विशेष रूप से उपेक्षित रोगों से निपटती है।
- **विरल रोगों के उपचार पर राष्ट्रीय नीति (2018)** में संक्रामक उष्णकटिबंधीय रोग शामिल हैं और यह विरल रोगों के लिए उपचारों पर अनुसंधान समर्थन की जरूरत की पहचान करता है।
- इसने रोगों और अनुसंधान वित्त पोषण के क्षेत्रों का प्राथमिकीकरण नहीं किया है अथवा यह तय नहीं किया है कि नवाचार को कैसे समर्थन दिया जाएगा।
- **प्रारूप राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल नीति (2017)** कहती है कि इसका एक उद्देश्य नवाचारी औषधियों के विकास और उत्पादन के लिए सक्षम वातावरण का निर्माण करना है, लेकिन यह नीति उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोगों के लिए औषधियों का उल्लेख नहीं करती है।
- **राष्ट्रीय बायोतकनीक विकास योजना (2015-2020)** रोटावायरस, हैजा, टायफाइड, रेबीज़ (मानव डीएनए आधारित), मलेरिया, डेंगू, क्षयरोग और जापानी इंसेफलाइटिस के खिलाफ टीकों के प्रीक्लीनिकल और क्लीनिकल विकास को प्रोत्साहित करना चाहती है।

7. BIS SDO पहचान योजना

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II- शासन, स्रोत- PIB)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, भारतीय रेलवे का RDSO (अनुसंधान डिजाइन एवं मानक संगठन) पहला संस्थान बन गया जिसे "एक देश एक मानक" मिशन के अंतर्गत SDO घोषित कर दिया गया।

BIS SDO पहचान योजना के बारे में

- भारत सरकार के "एक देश एक मानक" स्वप्न को हासिल करने के लिए, भारतीय मानक ब्यूरो (BIS), जो राष्ट्रीय मानक निकाय है, ने एक योजना की शुरुआत की है जो SDO की पहचान को उपलब्ध कराता है।
- इसका लक्ष्य अपने विशेष क्षेत्रों में मानक विकास में लगे देश के विभिन्न संगठनों के साथ उपलब्ध समर्पित डोमेन विशेष विशेषज्ञता और वर्तमान क्षमताओं का एकीकरण करना है। साथ ही यह देश में सभी मानक विकास गतिविधियों के संमिलन को सक्षम बनाता है।
- इस पहल से तकनीक और नवाचार के विकास के चरण से तीव्र संक्रमण होगा और चीजें वास्तविक प्रयोग के धरातल पर नजर आएंगी।

अनुसंधान डिजाइन एवं मानक संगठन के बारे में जानकारी

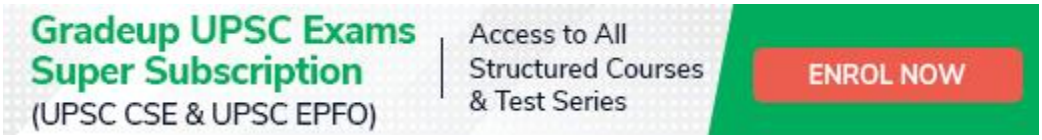

- यह रेलव मंत्रालय का एकमात्र अनुसंधान एवं विकास स्कंध है और भारत का अग्रणी मानकों में से एक है जो रेलवे क्षेत्र के लिए मानकीकरण कार्य को करने वाला निकाय है।
- यह लखनऊ में स्थित है।

खबरों में और भी है

WHO ने चीन के सिनोवैक टीके को स्वीकृति दी

- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने हाल में आपातकालीन प्रयोग के लिए कोविड-19 टीके सिनोवैक को स्वीकृति दे दी।
- पिछले महीने सिनोफार्म पहला चीनी टीका बन गया था जिसे WHO ने स्वीकृति दी थी।
- WHO ने आपातकालीन प्रयोग अधिसूचना उन टीकों को भी दी है जिसे फाइजर/बायोएनटेक, मोडर्ना, जॉनसन एंड जॉनसन और एस्ट्राजेनेका ने बनाया है। एस्ट्राजेनेका टीका भारत, दक्षिण कोरिया और यूरोपीय संघ में उत्पादित किया जा रहा है जिसकी गणना वह अलग करता है।

gradeup

Gradeup UPSC Exams Super Subscription (UPSC CSE & UPSC EPFO) | Access to All Structured Courses & Test Series ENROL NOW